पाठ 10. स्वर्ग की यात्रा

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की समस्या को व्यंग्य के माध्यम से उजागर करना है। साथ ही, यह शिक्षा देना भी है कि किसी बात का निर्णय बहुत सोच-समझकर करना चाहिए। दूसरों की बातों पर आँखें मूँदकर विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करना बुद्धिमानी नहीं मूर्खता कहलाता है।

पाठ का सारांश

चौपटपुर नामक राज्य का राजा बहुत ही मूर्ख था पर वहाँ का मंत्री बहुत चतुर। राजा मंत्री की सही-गलत सब बातें मानता था और मंत्री राजा को मूर्ख बना-बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता जाता था। वहाँ की प्रजा उन दोनों से बहुत परेशान थी। मंत्री राजा से कहता कि महाराज आप जहाँ जाएँगे मैं भी आपके साथ वहीं जाऊँगा। चाहे वह जगह स्वर्ग हो या नरक। राजा इस बात से बहुत खुश होता। एक दिन मंत्री की शिकायत पर राजा ने रसोइया महाराज को फाँसी की सज़ा का आदेश दे डाला। रसोइया ने मंत्री जी की खुशामद कर अपनी जान बचाने की प्रार्थना की। जब रसोइया महाराज को फाँसी दी जा रही थी ठीक उसी समय मंत्री वहाँ आ पहुँचा। उसने राजा से कहा कि पंचांग के अनुसार इस समय फाँसी पर चढ़ने वाला सीधा स्वर्ग जाएगा। यह बात सुनते ही मूर्ख राजा अत्यंत प्रसन्नता से बोला कि फिर तो वह स्वयं स्वर्ग जाएगा और अपने साथ अपने प्यारे मंत्री को भी लेकर चलेगा। बस फिर क्या था मंत्री मना करता रहा पर राजा की आज्ञा पाते ही जल्लाद ने मंत्री और राजा को झट-से फाँसी के तख्ते पर लटका दिया। इस तरह मूर्ख राजा और धूर्त मंत्री से प्रजा को छुटकारा मिल गया।

अध्यापन संकेत

पाठ का स्वयं वाचन करें तथा फिर एक-एक करके बच्चों से भी वाचन करवाएँ। बीच-बीच में बच्चों से पूछें तथा समझाएँ—

- बच्चों से पूछें कि क्या उचित है—किसी की हाँ में हाँ मिलाना? अथवा सबकी बात सुनने के बाद अपने बुद्धि-विवेक से निर्णय लेना?
- बच्चों से पूछें कि एक अच्छे राजा के अंदर कौन-कौन से गुण होने चाहिए।
- उन्हें बताएँ कि किसी पर भी आँखें बंद करके भरोसा नहीं करना चाहिए।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।